मुंगेर जिला (बिहार) में साक्षरता एवं शिक्षा का परिदृश्य

मुकुल आनन्द[1], प्रियंका कुमारी[2] एवं डॉ0 संयज कुमार झा[3]

[1,2]शोधार्थी

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

[3]विश्वविद्यालय प्रोफेसर

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

भूमिका

महाभारत काल का मोदगिरी आज मुंगेर के नाम से जाना जाता है। मुंगेर बंगाल के अंतिम नबाव मीरकासिम की राजधानी भी थी। मुंगेर जिला दक्षिण बिहार में स्थित है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 1419.7 वर्ग किमी0 तथा यहाँ की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 1367765 व्यक्ति है। मुंगेर जिले का अक्षांशीय विस्तार 24^0 21′ उत्तर से 25^0 30′ उत्तर एवं देशांतरीय विस्तार 86^0 10′ पूर्व से 86^0 40′ पूर्व हैं। मुंगेर जिला में विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय स्थापित है। जिसके कारण मुंगेर की ख्याति विश्व के अनेक देशों में है। मुंगेर के विकास में जमालपुर रेलवे कारखाना, मुंगेर का इम्पीरियल टौबेको कम्पनी तथा बंदूक कारखाना का काफी योगदान रहा है।

मुंगेर बिहार के प्राचीन जिलों में से एक हैं जिसका अपना एक अलग ऐतिहासिक एवं भौगोलिक महत्व रहा हैं। महाभारत काल में यह दानवीर राजा कर्ण का निवास स्थल एवं कार्यक्षेत्र रहा जबकि विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति के कारण मीरकासिम ने इसे बंगाल की राजधानी के रूप में चुना और बाद में अंग्रेजों ने शासन हेतु इसे नगरीय क्षेत्र के रूप में विकसित किया। यहाँ भागलपुर विश्वविद्यालय का सबसे प्राचीन महाविद्यालय आर0डी0 एण्ड डी0जे0 कॉलेज (1898) स्थित है, जो जिले में उच्च शिक्षा का केन्द्र माना जाता है। इसके अलावे जिसमें 07 राजकीय महाविद्यालय, 70 राजकीय उच्च विद्यालय, 973 प्राथमिक और मध्य विद्यालय तथा कई मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान भी है जो जिला में शिक्षा के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

वर्त्तमान में मुंगेर जिला की साक्षरता दर 70.46 है। यहाँ पुरूष साक्षरता दर 77.74 प्रतिशत है, साथ ही महिला साक्षरता भी संतोषजनक हैं। 2001 में महिला साक्षरता दर 47.40 % थी जो 2011 में बढ़कर 62.08% हो गई है। संतोषजनक सामाजिक आर्थिक स्थिति, वैवाहिक आवश्यकता, आत्मनिर्भर बनने और आगे बढ़ने की ललक, सुदृढ़ परिवहन व्यवस्था आदि के फलस्वरूप गत दशक में साक्षरता में आये इस आश्चर्यजनक परिवर्त्तन के प्रमुख कारक हैं, जो निश्चय ही प्रशंसनीय है। जिले का हर क्षेत्र एक दूसरे से इतनी अच्छी तरह जुड़ा है कि हर क्षेत्र के बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल, कॉलेज तक आसानी से पहुँच रहे है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा संचालित मध्याह्न भोजन योजना, साईकिल योजना, पोशाक तथा अन्य योजनाएँ बालिकाओं को विद्यालय तक लाने तथा उन्हें साक्षर बनाने में अपना उत्कृष्ट योगदान दे रही हैं। वस्तुस्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में अगर कुछ सुधार किये जाएँ तो वह दिन दूर नहीं जब मुंगेर की साक्षरता देश के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करेगी।

मुंगेर जिला : साक्षरता की स्थिति

साक्षरता की स्थिति विभिन्न परिस्थितियों में बदलती रहती है जैसे जंगली अवस्था, कृषि विकास की अवस्था, औद्योगिक अवस्था तथा वाणिज्य की अवस्था वाले समाज में साक्षरता का स्तर उत्तरोतर परिवर्त्तित होता रहता है। सम्पूर्ण साक्षरता के साथ

आर्थिक विकास तथा शैक्षणिक अवस्था में सुधार हुआ है। साक्षरता में वृद्धि किसी समाज में जीवन–यापन के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के विकास की गति को आगे बढ़ाने सांस्कृतिक विरासत को कायम रखने तथा वर्तमान जटिल सामाजिक परिवेश को सही रूप से जानने के लिए साक्षरता आवश्यक है।

साक्षरता मानव की प्रगति और विकास का मूलमंत्र है। मानव इस धरातल का तो सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है, जिसके विकास पर ही किसी क्षेत्र, समाज या राष्ट्र का विकास निर्भर करता है। सामान्यतः साक्षरता का अर्थ साक्षर होना अर्थात् पढ़ने और लिखने की क्षमता से सम्पन्न होना है। भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार अगर कोई व्यक्ति अपना नाम लिखने और पढ़ने की योग्यता हासिल कर लेता है तो उसे साक्षर माना जाता है। वास्तव में साक्षरता एक ऐसा अवयव है जिसकी सहायता से मानव स्वयं को बदलती दुनिया के अनुकूल बना पाता है, साथ ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विश्व को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करने की क्षमता को भी विकसित करता है। साक्षरता मानव के सोचने, समझने, रचना करने तथा विकास करने के ज्ञान को विकसित करता है। ज्ञान वह अनंतिम शक्ति है जिसकी सहायता से मानव स्वयं में तथा समाज दोनों में सकारात्मक परिवर्त्तन ला सकता है। साक्षरता लोगों में उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता लाकर सामाजिक विकास का आधार निर्माण करती है। यह गरीबी उन्मूलन, लिंगानुपात सुधारने, भ्रष्टाचार और आतंकवाद से निपटने में भी सहायक रहा है। यही कारण है कि साक्षरता को किसी भी समाज या राष्ट्र के प्रगति की वास्तविक सूचक माना जाता है।

बिहार में साक्षरता की दर 2011 की जनगणना के अनुसार 63.82% है। पुरूष साक्षरता दर 73.39% तथा महिला साक्षरता दर मात्रा 53.33% है। मुंगेर जिला साक्षरता की दृष्टि से राज्य में रोहतास (75.59) के बाद द्वितीय स्थान रखता है। यहाँ की कुल साक्षरता दर 73.29% है, अर्थात् यहाँ की 834162 जनसंख्या साक्षर है। पुरूष साक्षरता में मुंगेर राज्य में 9वें स्थान पर है जबकि महिला साक्षरता की दृष्टि से मुंगेर जिला राज्य में प्रथम स्थान रखता है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। यहाँ पुरूष साक्षरता 80.05% तथा महिला साक्षरता 65.53% है। मुंगेर जिला का अपना शैक्षणिक महत्व है। यहाँ तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय का सबसे प्राचीन महाविद्यालय आर0 डी0 एण्ड डी0 जे0 कॉलेज अवस्थित है। इसके अतिरिक्त यहाँ 7 महाविद्यालय, 73 राजकीय उच्च विद्यालय, 973 प्राथमिक और मध्य विद्यालय तथा कई मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान हैं जो जिले में साक्षरता के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यहाँ विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय स्थित है जहाँ विश्व के कोने–कोने से लोग योग की शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ खानकाह है जहाँ मुस्लिम सम्प्रदाय के छात्रा–छात्राएँ शिक्षा ग्रहण करते है।

तालिका संख्या – 1.1

मुंगेर जिला : प्रखण्डवार साक्षरता दर, 2011

प्रखण्ड का नाम	कुल साक्षरता दर	पुरूष साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर	शहरी साक्षरता दर			ग्रामीण साक्षरता दर		
				कुल साक्षरता दर	पुरूष साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर	कुल साक्षरता दर	पुरूष साक्षरता दर	महिला साक्षरता दर
मुंगेर सदर	78.28	84.51	71.26	81.82	86.43	76.59	72.19	81.19	62.21
बरियारपुर	66.22	74.43	56.58	82.13	89.93	73.48	65.45	73.71	55.74
जमालपुर	85.01	86.80	83.00	87.37	92.58	81.40	82.45	80.57	84.74
धरहरा	68.15	76.97	57.86	–	–	–	68.15	76.97	57.86
हवेली खड़गपुर	64.14	73.20	53.72	70.29	77.00	62.67	62.89	72.43	51.88
असरगंज	69.85	77.12	61.41	89.45	94.79	83.35	67.92	75.40	59.25

तारापुर	61.20	78.86	65.25	77.11	80.85	72.95	71.57	78.46	63.65
टेटिया बम्बर	72.16	81.62	61.21	–	–	–	71.16	81.62	61.21
संग्रामपुर	68.67	77.22	58.85	–	–	–	68.67	77.22	58.85
	73.29	**80.05**	**65.53**	**82.23**	**87.21**	**76.55**	**69.61**	**77.11**	**60.95**

स्रोत : जनसांख्यिकी विभाग, मुंगेर

मुंगेर सदर प्रखण्ड

साक्षरता की दृष्टि से यह प्रखण्ड जिले में दूसरा स्थान रखता है। यहाँ की कुल साक्षरता दर 78.28% है, जबकि पुरूष साक्षरता दर 84.51% तथा महिला साक्षरता दर 71.26% है। इसी प्रकार नगरीय साक्षरता दर 81.82% तथा ग्रामीण साक्षरता दर 71.13% है। नगरीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सुविधाओं की उपलब्धि के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक साक्षरता देखने को मिलती है। इस प्रखण्ड में साक्षरता के विकास के निम्न कारक हैं :–

- नगरीय क्षेत्र का विस्तार
- जिले में अधिकांश विद्यालय तथा महाविद्यालयों की उपस्थिति
- आर्थिक और सामाजिक सम्पन्नता
- रहमानी बी0एड0 कॉलेज, होम्योपैथ कॉलेज, विश्वनाथ सिंह लॉ कॉलेज, आई0 टी0 आई0 कॉलेज आदि की उपस्थिति के कारण शिक्षार्थियों को उच्चतर शिक्षा के अवसर की प्राप्ति
- इस प्रखण्ड में विश्व का प्रथम योग विश्वविद्यालय भी है जहाँ से हर वर्ष कई हजार शिक्षार्थी योग विद्या प्राप्त कर विश्व के कोने–कोने में योग की शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।
- परिवहन सुविधओं का विस्तार।

बरियारपुर प्रखण्ड

बरियारपुर प्रखण्ड साक्षरता के मामले में जिले में सातवें स्थान पर है। यहाँ की कुल साक्षरता दर 86.22% है। 74.43% पुरूष साक्षरता दर संतोषजनक अवस्था में है। जबकि महिला साक्षर 56.58% निम्न स्तर पर है। यह प्रखण्ड अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्र वाला प्रखण्ड है, जहाँ साक्षरता दर 65.45 है जबकि शहरी क्षेत्र यह दर 82.13 की उच्च अवस्था पर है। यहाँ नगरीय क्षेत्र में साक्षरता के विकास और ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता एवं शिक्षा निम्न अवस्था के विभिन्न कारण हैं :–

- इस प्रखण्ड की 98% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जिनका प्रमुख व्यवसाय कृषि है।
- ग्रामीण क्षेत्र में उद्योग धंधे आदि की कमी के कारण आर्थिक विपन्नता और निम्न जीवन स्तर है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षणिक सुविधओं का अभाव।
- यहाँ 5% जनसंख्या नगरीय है, जो बाजार क्षेत्र में निवास करती है। इस नगरीय क्षेत्र के रेलवे स्टेशन की निकटता के कारण शिक्षार्थी मुंगेर तथा भागलपुर उच्च शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं।
- नगरीय क्षेत्र में शैक्षणिक सुविधओं की उपिस्थति।
- सरकारी तथा निजी शिक्षण संस्थानों का जमाव।
- सड़क परिवहन तथा रेल परिवहन की सुविधओं का समुचित विकास।

जमालपुर प्रखण्ड

85.04% साक्षरता दर के साथ जमालपुर प्रखण्ड मुंगेर जिला में प्रथम स्थान पर है। यहाँ पुरूष साक्षरता दर 86.80% उच्च है ही साथ ही महिला साक्षरता 83% की उच्च दर के साथ जिले में प्रथम स्थान पर है। शहरी साक्षरता और ग्रामीण साक्षरता में भी यह प्रखण्ड मुंगेर में प्रथम स्थान पर है। (तालिका संख्या– 1.1) से स्पष्ट है कि यहाँ शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ ज्यादा साक्षर है। स्पष्ट है कि इस प्रखण्ड में महिला सशक्तिकरण का काफी विकास हुआ है तथा शहरी क्षेत्रों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं। जमालपुर प्रखण्ड में शिक्षा के विकास के निम्न कारण हैं :–

- केन्द्रीय विद्यालय, जे0 आर0 एस0 कॉलेज, जमालपुर कॉलेज तथा कई अन्य सरकारी तथा निजी शिक्षण संस्थानों की उपस्थिति।
- मिशनरी स्कूलों का जमाबड़ा।
- एशिया के प्रथम रेलवे कारखाना के स्थित होने के कारण नई–नई मानव कॉलोनी का विकास, जो सभ्य तथा शिक्षित व्यक्तियों से परिपूर्ण है और शिक्षा के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
- परिवहन के साधनों का अच्छा विकास।
- जमालपुर रेलवे जंक्शन की उपस्थिति के कारण यहाँ के शिक्षार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने आस–पास के क्षेत्रों जैसे भागलपुर, पटना आसानी से जा पाते हैं। इसी प्रकार सड़क परिवहन की सुविध के कारण प्रतिदिन कई विद्यार्थी जमालपुर से मुंगेर शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं।

धरहरा प्रखण्ड

साक्षरता की दृष्टि से इस प्रखण्ड का जिले में सातवाँ स्थान है। 76.97% की दर के साथ पुरूष साक्षरता संतोषजनक अवस्था में है, परन्तु महिला साक्षरता में यह क्षेत्र काफी पीछे है। यहाँ महिला साक्षरता मात्र 57.86% है। इस प्रखण्ड में शिक्षा की इस स्थिति के निम्न कारण हैं :–

- धरहरा प्रखण्ड एक पूर्णतः ग्रामीण जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यहाँ नगरीकरण शून्य अवस्था में है।
- शिक्षण संस्थाअनों की कमी तथा अन्य शैक्षणिक सुख–सुविधओं का अभाव।
- कृषि पर निर्भरता के कारण सामाजिक तथा आर्थिक रूप से इस प्रखण्ड का पिछड़ा होना।
- प्रखण्ड के दक्षिण और दक्षिण पूर्व के क्षेत्रों में पहाड़ियों और जंगलों के फैलाव के कारण यह प्रखण्ड शुरू से नक्सली गतिविधियों का केन्द्र रहा है।
- नक्सली गतिविधि के प्रभाव के कारण शिक्षित, सभ्य और आर्थिक दृष्टि से समृद्ध व्यक्ति यहाँ से पलायन कर रहे हैं, जो साक्षरता के विकास में बहुत बड़ी रूकावट है।

हवेली खड़गपुर प्रखण्ड

इस प्रखण्ड की साक्षरता दर 61.20 है। साक्षरता के मामले में यह जिला में आँठवे स्थान पर है। यहाँ पुरूष साक्षरता 73. 20% संतोषजनक अवस्था में है परन्तु महिला साक्षरता 53.72% है तथा यह प्रखण्ड काफी पिछड़ा हुआ है। आँकड़ों से स्पष्ट है कि यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र में शिक्षा का विकास अधिक हुआ है। यहाँ साक्षरता की वर्त्तमान स्थिति निम्न कारण है :–

(i) यहाँ की मात्र 16% आबादी ही नगरीय है, जबकि 85% जनसंख्या ग्रामीण है, जहाँ सुख–सुविधओं का घोर अभाव है।

(ii) शिक्षण संस्थानों की कमी तथा शैक्षणिक सुविधओं की अल्पता।

(iii) समतल भू–भाग होने के कारण कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य केन्द्र है।

(iv) कृषि की प्रधानता तथा औद्योगिक पिछड़ापन के कारण आर्थिक और सामजिक रूप से इस प्रमुख का कमजोर होना।

(v) प्रखण्ड के दक्षिणी भाग में गंगटा जंगल और पश्चिम में पहाड़ी क्षेत्र की उपस्थिति के कारण यहाँ परिवहन की सुविधा का समुचित विकास नहीं हो पाया है जिस कारण यह क्षेत्र असामाजिक गतिविधियों से भी प्रभावित रहा है।

असरगंज प्रखण्ड

09.85% की दर के साथ यह प्रखण्ड साक्षरता में मुंगेर जिले में चौथे स्थान पर है। यहाँ पुरूष साक्षरता दर 77.12% तथा महिला सारक्षता दर 61.41% है। यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरों में साक्षरता दर अधिक है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि यह प्रखण्ड 89.45% की दर के साथ नगरीय साक्षरता में जिले में प्रथम स्थान पर है। यहाँ साक्षरता की वर्त्तमान स्थिति के लिए जो कारक उत्तरदायी है, वे निम्न है

(i) असरगंज ग्रामीण जनसंख्या की बहुलता वाला प्रखण्ड है। यहाँ की मात्र 8% जनसंख्या ही नगरीय है।

(ii) ग्रामीण क्षेत्रों की बहुलता के कारण शैक्षणिक तथा अन्य सुविधओं का घोर अभाव है।

(iii) असरगंज मुख्यालय क्षेत्र जलालाबाद ही नगरीय क्षेत्र है, जहाँ चावल की

मिलों की उपस्थिति के कारण आर्थिक सम्पन्नता विकसित हो रही है।

(iv) ग्रामीण क्षेत्रों (92%) में कृषि पर निर्भरता के कारण आर्थिक पिछड़ापन व्याप्त है, जिसके कारण लोग शिक्षा से अधिक काम कर पैसे कमाने को अधिक महत्व देते हैं।

तारापुर प्रखण्ड

साक्षरता की दृष्टि से यह जिला का सबसे पिछड़ा हुआ प्रखण्ड है। यहाँ की कुल साक्षरता दर मात्र 61.20% है जबकि पुरूष साक्षरता दर 78.86% तथा महिला साक्षरता दर 65.25% है, जो क्षेत्र में महिलाओं के पिछड़ेपन को प्रदर्शित करता है। नगरीय क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा साक्षरता का विकास अधिक हुआ है। यहाँ शिक्षा के विकास नहीं होने के निम्न कारण हैं :–

- यह ग्रामीण क्षेत्रों की अधिकता वाला प्रखण्ड है। यहाँ की 84% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है, जबकि मात्र 16% जनसंख्या ही नगरीय है।
- ग्रामीण क्षेत्रों के कृषि पर निर्भरता के कारण सामाजिक और आर्थिक रूप से यह क्षेत्र विकसित नहीं हो पाया है, तथा संसाधनों के अभाव में शिक्षा का प्रसार नहीं हो पाया है।
- तारापुर मुख्यालय और गाजीपुर क्षेत्र प्रशासकीय केन्द्र होने और पेट्रोडालर के कारण नगरीय क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ है जहाँ शिक्षा का प्रसार देखा जा सकता है।
- शिक्षण संस्थानों तथा अन्य शैक्षणिक सुख–सुविधओं का पूर्णतः अभाव है।
- परिवहन व्यवस्था की कमी के कारण भी यह प्रखण्ड शैक्षणिक रूप से विकसित नहीं हो पाया है।

टेटिया बम्बर प्रखण्ड

टेटिया बम्बर प्रखण्ड साक्षरता की दृष्टि से मुंगेर जिला में तीसरे स्थान पर है। यहाँ की कुल साक्षरता दर 71.16% है जबकि पुरूष साक्षरता दर 81.62% तथा महिला साक्षरता मात्र 61.21% है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि यहाँ पुरूषों की अपेक्षा महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में काफी पीछे हैं। यहाँ साक्षरता की वर्त्तमान स्थिति के निम्न कारण हैं :–

- टेटिया बम्बर एक ऐसा प्रखण्ड है, जहाँ नगरीकरण का सूत्रपात अब तक नहीं हो पाया है। 2011 की जनगणना के अनुसार अभी भी यहाँ की 100% आबादी ग्रामीण है, जहाँ नगरीय सुविधओं के अभाव में शिक्षा का थोड़ा विकास हुआ है परन्तु पूर्ण रूप से नहीं।
- विषम धराकृति और जंगलों की अधिकता के कारण यहाँ परिवहन सुविधओं का अभाव है, जिसके कारण बच्चे जिला मुख्यालय जाकर शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते है।

- जंगलों में नक्सलियों के निवास तथा सम्पूर्ण प्रखण्ड नक्सली गतिविधियों से प्रभावित होने के कारण अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूर या आस–पास के क्षेत्रों में नहीं भेज पाते।
- शिक्षण संस्थानों तथा संबंधित सुविधाओं की कमी के कारण भी यह क्षेत्र शैक्षणिक रूप से प्रगति नहीं कर पाया है।

संग्रामपुर प्रखण्ड

मुंगेर जिला के सबसे दक्षिणी भाग में स्थित यह प्रखण्ड साक्षरता की दृष्टि से जिले में पाँचवां स्थान रखता है। यहाँ की कुल साक्षरता दर 68.67% है, जबकि पुरूष साक्षरता दर 77.22% तथा महिला साक्षरता 58.85% है। आंकड़ों से स्पष्ट है कि यहाँ पुरूष साक्षरता तो संतोषजनक अवस्था में है, परन्तु महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में अभी भी काफी पीछे है। शिक्षा के इस स्वरूप के लिए यहाँ निम्न कारण उत्तरदायी हैं :–

- समीपीय प्रखण्ड टेटिया बम्बर की तरह यह प्रखण्ड भी शून्य नगरीकरण वाला क्षेत्र है। यहाँ की आबादी ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है जहाँ सुविधाओं के अभाव में शिक्षा का समुचित विकास नहीं हो पाया है।
- प्रखण्ड के दक्षिणी भाग में जंगलों की उपसिथति जो नक्सलियों का निवास स्थान है, के कारण सम्पूर्ण प्रखण्ड नक्सली गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है जो इस क्षेत्र के शैक्षणिक रूप से विकसित नहीं होने का सबसे बड़ा कारण है।
- पूर्ण रूप से कृषि पर निर्भरता और उद्योग धंधों की शून्यता के कारण यह क्षेत्र सामाजिक और आर्थिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ है।
- शिक्षण संस्थानों तथा अन्य शैक्षणिक सुविधओं का अभाव।

निष्कर्षतः ऐसा कहा जा सकता है कि मुंगेर जिले के विभिन्न प्रखण्डों में साक्षरता एवं शिक्षा की समान स्थिति नहीं है, क्षेत्रीय एवं स्थानिक भिन्नता के लिए भौतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारक उत्तरदायी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता एवं शिक्षा की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है जबकि नगरीय क्षेत्रों में यह सन्तोषप्रद है। साक्षरता सामाजिक–आर्थिक विकास का मापक है। इससे आर्थिक स्तर प्रभावित होता है, साथ ही आर्थिक–सामाजिक उन्नति शिक्षा स्तर को भी प्रभावित करती है। मुंगेर जिला साक्षरता एवं शिक्षा की दृष्टि से विकासशील माना जाता है।

संदर्भ :

1. मौर्य, एस0 डी0 (2016) : जनसंख्या भूगोल, प्रवालिका प्रकाशन, इलाहाबाद
2. चांदना, आर0 सी0 (1980) : जनसंख्या भूगोल, कल्याणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. रंजना श्री (2005) : मुंगेर जिला (बिहार) जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
4. मधुकर नन्द किशोर (2001) : मुंगेर जिला (बिहार) में जन स्थानान्तरण और आर्थिक विकास पर साक्षरता का प्रभाव, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
5. सिंह जी0एन0 एवं सिंह डी0पी0 (1987) : सम आसपैक्टस ऑफ पोपुलेशन स्टडीज इन इण्डिया, सुधा पब्लिकेशन, मुंगेर
6. घोष, सान्तवना (1973) : पोपुलेशन ऑफ बिहार : ए ज्योग्रफिकल स्टडी, अप्रकाशित पी–एच0डी0 शोध–प्रबन्ध, भूगोल विभाग, बी0एच0यू0, वाराणासी
7. घोष, बी0 एन0 (1985) : फन्डामेन्टल्स ऑफ पोपुलेशन ज्योग्रफी, स्ट्रलिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
8. हंसराज (1978) : फन्डामेंट्ल्स ऑफ डिमोग्राफी, सुरजीत प्रकाशन, दिल्ली